RICERCA, INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH AND INNOVATION
ISSN: 2583-083X
Peer Reviewed Journal, www.rijmri.com

भारत-अमेरिका व्यापारिक सम्बंध: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

[1]प्रीति कुमारी, [2]डॉ. अंजू शर्मा (असिस्टैंट प्रोफेसर)

समाज शास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग, समाज शास्त्र संकाय
दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनीवर्सिटी)

सार

भारत–अमेरिका व्यापार संबंध औपनिवेशिक युग से विकसित होते हुए आज एक मजबूत रणनीतिक और आर्थिक साझेदारी में बदल चुके हैं। प्रारंभ में यह संबंध ब्रिटिश शासन के अधीन थे, लेकिन 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद द्विपक्षीय व्यापारिक संबंध स्वतंत्र रूप से विकसित होने लगे। शीत युद्ध, भारत की गुटनिरपेक्ष नीति और 1974 के परमाणु परीक्षणों के बाद अमेरिका के प्रतिबंधों के कारण इन संबंधों में प्रारंभिक वर्षों में बाधाएं रहीं। 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत ने वैश्विक निवेश के लिए अपने द्वार खोले, जिससे अमेरिका ने भारत को एक संभावनाशील बाजार के रूप में देखा। दोनों देशों के बीच सूचना तकनीक, रक्षा, ऊर्जा और सेवा क्षेत्रों में सहयोग बढ़ा। 2023–24 में द्विपक्षीय व्यापार 190.1 अरब डॉलर तक पहुँच गया, जिससे अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन गया। हालाँकि, व्यापार में अभी भी बाधाएँ हैं, जैसे– उच्च शुल्क दरें, डेटा स्थानीयकरण, डिजिटल सेवा कर, और बौद्धिक संपदा सुरक्षा की कमी। फरवरी 2025 में ट्रम्प-मोदी शिखर बैठक में 'मिशन 500' की घोषणा की गई, जिसका लक्ष्य 2030 तक व्यापार को 500 अरब डॉलर तक बढ़ाना है। यह साझेदारी दोनों देशों के आर्थिक और रणनीतिक हितों को मजबूत करने की दिशा में अग्रसर है।

परिचय

भूमण्डलीकरण के इस दौर में काई भी देश तठस्य नहीं रह सकता है। प्रत्येक देश को दूसरे देशों के साथ आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक हो गया है। प्रत्येक देश अपने आर्थिक विकास के लिए दूसरे देशो से वस्तुओं व सेवाओं का आयात व निर्यात करता है, जिसे विदेशी व्यापार कहा जाता है । दो देशों के मध्य होने वाले व्यापार को द्वीपक्षीय व्यापार कहा जाता है। द्विपक्षीय व्यापार के लिये दो देश व्यापार समझौते करते है और इन समझौतो के तहत दोनो देशों के मध्य टेरिफ शुल्छ, आयात निर्यात की नीतियाँ और कई प्रकार के व्यापार आधारित नियम निर्धारित होते है। दिपक्षीय व्यापार से दोनों देशों को अनेक आर्थिक लाभ प्राप्त होते है जैसे दोनो देशो की आवश्यकताओं की पूर्ति, रोजगार के अवसरो में बढ़ोतरी, दिपक्षीय व्यापार द्वारा मुद्रा का प्रवाह बढ़ता है साथ ही सस्ते उत्पाद व सेवाएं प्राप्त होती है द्विपक्षीय व्यापार के कारण दो देशो बीच सम्ब प्रगढ़ होते है।

भारत अमेरिका व्यापार संबंध - एतिहासिक पृषठभूमि

भारत अमेरिका आर्थिक व्यापारिक सम्बंध औपनिवेशिक काल से विद्यमान रहे है परंतु उस समय भारत स्वतन्त्र रूप से से भारत अमेरिका के मध्य दिपक्षाप व्यापार नहीं वरन् अंग्रेजी सरकार के अधीन रहा। बाद में स्वतंत्र रूप से भारत की स्वतंत्रता के बाद से (1947) के बाद से स्वतन्त्र रूप से भारत अमेरिका के मध्य द्विपक्षीय व्यापारिक सम्बन्ध विकसित हुए। देखा जाये तो वर्तमान में भारत अमेरिका के मध्य जो व्यापारिक आर्थिक सम्बन्ध विद्यमान है उनकी नीव औपनिवेशिक काल में ही रखी गयी थी। 18वीं शताब्दी में अमेरिका ब्रिटिश उपनिवेश से स्वतन्त्र हुआ । भारत अमेरिका के मध्य व्यापार प्रमुख रूप से समुद्री मार्ग से होता रहा है, भारत इसमें में प्रमुख बंदरगाह कलकत्ता, मद्रास व मुम्बई के द्वारा व्यापार किया जाता है। भारत अमेरिका व्यापार का संचालन ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा किया जाता था । औपनिवेशिक काल मे अमोरेका भारत से कपडा, नील, मसाले, चाय व अफीम जैसी वस्तुओं का आयात करता था , साथ ही भारत अमेरिका से चाँदी, सोना, तम्बाकू, शराब, हथियार,

कृषि उपकरण व मशीनरी इत्यादि सामान का आयात करता था। इस दौर में भारतीय मुद्रा का मूल्य अमेरिकी मुद्रा से अधिक था। अमेरिका में भारतीय सामान की बड़ी मात्रा मे मांग रहती थी इसलिये बड़ी मात्रा में अमेरिकी सोना-चाँदी का प्रवाह भारत की तरफ रहता था। सन् 1813 तक ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी का भारतीय व्यापार पर एकाधिकार होने के कारण भारत - अमेरिकी व्यापार में बड़ी बाधा रही, 1813 के चार्टर एक्ट के बाद ब्रिटिश सरकार ने भारत – अमेरिका व्यापार हेतु थोडी छूट प्रदान की।

1947 के बाद भारत अमेरिका व्यापार सम्बन्धों का विकास

भारत 1947 में ब्रिटिश औपनिवेश से मुक्त हुआ, तथा अमेरिका के साथ स्वतन्त्र व्यापार करने की राह में आगे बढ़ा। अमेरिका एक पूंजीवादी राष्ट्र है और भारत ने अपने राष्ट्र विकास को बढ़ाने के लिये मिश्रित अर्थव्यवस्था का अनुपालन किया । स्वतंत्रता के बाद भारत अमेरिका व्यापारिक व राजनीतिक संबंधों में शीत युद्ध की राजनीति बड़ी बाधा के रूप में रही । भारत की तठस्थता की नीति ने भारत अमेरिका सम्बन्धो में कड़वाहट पैदा की। अतः दोनो देशों के म्ध्य सीमित आर्थिक सम्बंध कायम रहे । हालांकि 1949 में चीन में साम्यवादी व्यवस्था कायम होने के बाद अमेरिका ने भारत को आर्थिक सहायता प्रदान करना शुरू किया । अमेरिका द्वारा मार्शल 'चार सूत्रीय कार्यक्रम के आधार पर भारत को कृषि विज्ञान और प्रोद्योगिकी आदि क्षेत्रों में सहयोग प्रदान किया । जिसमें हरित क्रांति व आई. आई. टी. कानपुर को विकसित करने में सहायता प्रदान की। अमेरिकी कानून P.L-480 के द्वारा भारत को आर्थिक सहायता प्रदान की गई । इसके तहत भारत को ऋणधनराशि भारतीय धन के रूप में भी लौटा सकता था। 1953-54 भारत अमेरिका के मध्य साकारात्मक आर्थिक सम्बंध प्रदर्शित हुए। 1965 में तक भारत में भयंकर यूखा की समस्या रही, उस समय अमेरिका ने भारत को आर्थिक सहायता प्रदान की तथा अनाज व खाद्यान् भारत के लिए भेजा।

1970 के बाद भारत पाक युध्द के दौरान अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को समर्थन व 1974 में भारत परमाणु परिक्षण के बाद अमेरिका द्वारा भारत पर लगाये गये विभिन्न प्रतिबन्धों के कारण दोनों देशों के मध्य आर्थिक व्यापारिक सम्बन्धों में कमी आयी । इसके बाद इंदिरा गांधी सरकार द्वारा विदेशी मुद्रा विनिमय अधिनियम (FERA 1973) के लागू होने के बाद से दोनो देशों के मध्य व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा । इसके बाद कई अमेरिकी कम्पनी जैसे कोका कोला व आई. बी. एम. भारत छोड़ कर वापस चली गयी। जिस कारण अमेरिका के भारत मे निवेश मे कमी आयी। 1982 के दशक में इंदिरा गांधी ने अमेरिकी यात्रा द्वारा भारत अमेरिका सम्बधो को पुनः प्रगढ़ करने का प्रयास किया। राजीव गाँधी के कार्यकाल में भारत- अमेरिन के मध्य सूचना प्रद्योगिकी, सुरक्षा तकनीकि सुरक्षा, सैन्य एवं आर्थिक क्षेत्रो में सहयोग बढ़ा और 1987 में "सुपर कम्प्यूटर के कई पार्टस प्राप्त करने हेतु अमेरिका से समझौते हुए। इस प्रकार भारत की स्वतंत्रता से सन् 1990 के मध्य दोनो देशों के मध्य आर्थिक सम्बंधों मे विभिन्न उतार चढाव बने रहे।

उदारीकरण की नीति (1991) के बाद भारत-अमेरिका आर्थिक सम्वन्ध

1990 के शुरुआत में सोवियत संघ के विघटन हुआ । व 1991 में कई वर्षो से चले आ रहे शीत युध्द का अंत हुआ। इसके बाद वैश्विक दृष्टिकोण मे परिवर्तन आया, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में आर्थिक तत्वों को प्रधानता दी जाने लगी। इस दौरान खाड़ी समस्या के कारण से तेल के दामों में बड़ा इजाफा हुआ। जिससे भारत के सामने भी आर्थिक समस्या उत्पन्न हो गयी, 1991 में भारत की आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय हो गयी की भारत के पास मात्र 15 दिन का ही कोष शेष बचा था । इस आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए भारतीय सरकार द्वारा आर्थिक उदारीकरण की नीति को अपनाया गया तथा विदेशी कम्पनीयो को भारत में निवेश के लिए आमंत्रित किया। इसके बाद अमेरिका ने भारत को एक उभरते बाजार के रूप में देखा । अमेरिकी कम्पनीयां Microsoft, IBM, Mc Donald's, Pepsi, Coca-cola से भारत मे दोबारा निवेश किया। इस दौरान दोनो देशों के आर्थिक सम्धों में मजबूती आयी ।

21वीं सदी में भारत अमेरिका व्यापारिक सम्बंध

21वीं सदी में भारत अमेरिका आर्थिक व्यापारिक सम्बंधों क नया अध्याय प्रारम्भ हुआ। सन् 2002 में भारत अमेरिका दिपक्षीय व्यापार में 16 विलियन अमेरिका डॉलर तथा सेवा क्षेत्रो में 8-10 विलियन डॉलर की वृध्दि देखी गयी। अमेरिकी प्रत्यक्ष निवेश में 250 मिलियन डॉलर तथा पॉटफोलियों में 1 बिलियन डॉलर से कम की अवनति हुई। 2002 में अमेरिका के निर्यात और आयत में अवनति की तुलना में भारत का अमेरिका को निर्यात 12 विलियन डॉलर पहुंचा जो 21.4% तक बढ़ा। वही अमेरिका का निर्यात 2002 में 4.1 विलियन तक, 9.1 % बढ़ा । 2003 मे भारत का निर्यात में 2002 की तुलना में 13.08% में अधिक वृद्धि हुई व भारत को अमेरिकी निर्यात 24% से अधिक बढ़ा।

वर्ष	आयात	निर्यात	संतुलन
2010	19,248.9	29,532.9	+10,284.1
2011	21,542.1	36,154.5	14,612.3
2012	22,105.7	40,512.6	18,406.9
2013	21,810.4	41,810.0	19,999.5
2014	21,499.1	45,358.0	23,858.9
2015	21,452.9	44,782.7	23,329.7
2016	21,647.2	46,024.2	24,377.1
2017	25,647.8	48,549.4	22,901.6
2018	33,176.6	54,249.6	21,073.0
2019	34,222.8	57,879.0	23,656.2
2020	27,081.7	51,254.6	24,172.9
2021	39,817.4	73,308.2	33490.8
2022	46,948.2	85,525.2	38,577.0
2023	40,374.9	83,686.1	43,311.3
2024	41,752.7	87,416.4	45,663.8

श्रोतः धातु डिपार्टमेन्ट आफ कॉमर्स यू.एस. ब्यूरो ऑफ सेंसर

भारत अमेरिका के मध्य व्यापारिक सम्बंधों का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि 2010 में दोनो देशं के मध्य में कुल 48,781.8 द्वीपक्षीय व्यापार था जो बढ़कर 2024 तक भारत अमेरिका कुल व्यापार 129,169.1 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया। यह भारत अमेरिका व्यापारिक सम्बंधों की मजबूती को दर्शाता है । भारत अमेरिका के मध्य व्यापारिक संतुलन को देखने से ज्ञात होता है कि यह व्यापारिक संतुलन भारत के पक्ष में है। भारत अमेरिका से 2010 में 10,284.1 बिलियन डॉलर अतिरिक्त शेष प्राप्त हुआ जो 2024 में बढ़ कर 45,663.8 बिलियन डॉलर अमेरिकि डॉलर पहुच गया ।

आज के समय में भारत अमेरिका का सबसे बड़ा व्यापरिक साझेदार है। भारत अमेरिका के मध्य 2023 में कुल 190.1 अरब डॉलर का दिपक्षीय व्यापार देखा गया। अमोरिका द्वारा भारत से 4.99 अरब डॉलर के निवेश किया जिससे अमेरिका भारत का तीसरा सबसे बड़ा निवेशक बन गया है। सी. आई. आई.. अध्ययन 2023 के अनुसार भारत की 163 भारतीय कम्पनीयों द्वारा अमेरिका में 40 अरब डॉलर का निवेश किया। 2022 में भारत (वित्त मंत्रालय) और अमेरिकी इंटरनेशनल डेवलपमेंट फाइनेंश कॉपरेशन (डीएफसी) ने इक्विटी निवेश, सह बीमा, अनुदान, फिजिविलिटी स्टडी और तक्नीकि महायता के लिए निवेश को बढाने सम्बंधी समझौते पर हस्ताक्षर किये थे। जिस कारण को DFC का भारत पॉट्फॉलिओ सौ से अधिक परियोजनाओं में चार अरब रहा ।

वर्ष 2024 में भारत से अमेरिका में निर्यात वस्तुए

भारत द्वारा 2024 में कुल 7346 वस्तुओं का निर्यात किया गया जो 77-5 बिलियन डॉलर से ज्यादा था। भारत द्वारा निर्यातित वस्तुओं में इंजीनियरिंग का सामान (17.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर) रत्न व आभूषण (9.90 बिलियन अमेरिकी डॉलर), दवा निर्माण और जैविक (8.72 बिलियन अमेरिकी डॉलर) पेट्रोलियन उत्पाद (583 बिलियन अमेरिकी डॉलर) और सहायक उपकरण सहित आर. एम. जी. कपास (4.71 बिलियन अमेरिकी डॉलर) शामिल है।

वर्ष 2024 में अमेरिका से अयात बस्तुएं

वित्त वर्ष 2024 में भारत द्वारा अमेरिका से 5749 वस्तुओं का आयात किया। जो वित्त वर्ष 2024 में अमेरिका से भारत में आयात 40.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा। भारत द्वारा अमेरिका से आयातित वस्तुओं में खनिज ईधन और तेल (12.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर) मोती व कीमती पत्थर (5.16) प, परमाणु रिएक्टर बॉयलर और मशीनरी (3.75 बिलियन अमेरिकी डॉलर) , विद्युत मशीनरी आदि (2.38 बिलियन अमेरिकी डॉलर) शामिल है।

भारत अमेरिका व्यापार समझौता

1) भारत अमेरिका ट्रेड पॉलिसी फॉरम (TPF) - भारत व अमेरिका दोनो देशों ने मिलकर 2005 में भारत अमेरिका ट्रेड पॉलिसी फॉरम की शुरुआत की । मार्च 2010 में इस समझौते पर हस्ताक्षर किये। औपचारिक रूप से इसे भारत-अमेरीका के बीच व्यापार और निवेश मुद्दों पर चर्चा करने के लिए प्राथमिक तंत्र के रूप में स्थापित किया गया। जनवरी 2023 में वाशिंगटन डीसी में टीपीएफ की 13वी वैठक आयोजित की गयी जिसमें अमेरिका के व्यापार प्रतिनिधि और भारत के वाणिज्य और उद्योग मंत्री शामिल हुए।

भारत अमेरिका व्यापार प्रमुख बाधाएं

2023 की USTR रिपोर्ट के अनुसार भारत में "डिजिटल व्यापार और ई-कॉमर्स पर बाधाएं" (Barriers to Digital Trade and Electronic Commerce) निम्न है ।

1) भारत द्वारा आयात

1. शुल्क नीतियों बाधाएँ- भारत की 2021 की MFN (Most favourit Nation) शुल्क दर 18.31 थी। जो किसी भी प्रमुख विश्व अर्थव्यवस्थाओं मे लागू दरों में सबसे अधिक है। यह गैर कृषि उत्पादों पर लागू औसत शुल्क दर 14.9% और कृषि उत्पादों पर 39.2% थी । भारत कई वस्तुओं पर उच्च शुल्क बनाए रखता है, जिनमें वनस्पति तेल (45% तक), सेब मक्का और मोटरसाइकल (50%) फूल और ऑटोमोबाइल (60%), प्राकृतिक रबर (70%), कॉफी, किशमिश और अखरोट (100%) मादक पदार्थों (150%) तक शामिल है। इसके अलावा भारत कुछ दवा निर्माणों, जीवन रक्षा दवाओं और विश्व स्वास्थ संगठन (WHO) को आवश्यक दवाओ की सूची में शामिल तैयार दवाओ पर 20% से अधिक मूल सीमा शुल्क लागू करता है।

2. कृषि उत्पादो पर भारत की बंधित शुल्क दरें दुनिया में सबसे अधिक है। जो औसतन 113.1% और कुछ मामलों में 300% तक है। विश्व व्यापार संगठन की बंधित और लागू दरों के बीच बड़े अंतर के कारण भारत को कभी भी शुल्क दरों को बदलने की पर्याप्त स्वतंत्रता है। जिससे अमेरिकी निर्यातकों के लिये भारी अनिश्चितता उत्पन्न होती है।

जून 2019 में, जब अमेरिका ने भारत के लिय जनरालाइज्ड सिस्टम ऑफ प्रेफरेंस (GSP) कर्यक्रम के तहत दी गयी प्राथमिकता वाली टैरिफ छूट वापस ले ली, तो भारत ने 28 विभिन्न अमेरिकी उत्पादों पर 1.7% से 20% तक जवाबी शुल्क लागू कर दिये। इनमे शामिल थे। बादाम, सेब, अखरोट, चना, मसूर फॉस्फोरिक एसिड, बोरिक

एसिड, डायग्नॉस्टिक अभिकर्मक, चयनित इंस्पात और एल्यूमिनियम उत्पाद आदि। भारत द्वारा इन टैरिफों को लागू करने का निर्णय अमेरिका द्वारा एल्यूमीनियम आयात पर लगाए गए टैरिफ का जवाब देने के लिए था। जुलाई 2019 में अमेरिका द्वारा इन जवाबी शुल्को को चुनौति देने के लिये WTO में अक्टूबर 2019 में एक पैनल गठित किया गया, जिसकी कार्यवाही अभी जारी है।

कर सम्बंधी बाधायें

2018 से भारत में आयातों पर 10% सामाजिक कल्याण अभिभार (social welfare surcharge) लगाया गया । जो अन्य शुल्कों के मूल्यों पर लागू किया जाता है । आयातित उत्पादन के सीमा शुल्कों पर लागू नहीं होता है ।

गैर शुल्क बाधाएँ

भारत अमेरिका व्यापार में कई गैर शुल्क सम्बंधी बाधाएं बनी हुई है इन्हें तीन श्रेणियों में विभाजित न किया जा सकता है।

1.पूर्ण प्रतिबंधित या निषिध्द वस्तुएँ: कुछ वस्तुए जिन्हें भारत में प्रवेश की अनुमति नहीं है, जैसे टेलो (चर्बी) वसा, और पशु मृल तेल आदि

2.वर्जित वास्तुए जिनके लिए आयात लाइसेन्स की आवश्यकता होती है। जैसे कुछ पशु उत्पाद और विशिष्ट रासायन ।

3.सरकारी नियंत्रण के तहत आयात किये जाने वाले उत्पाद: डनमें कुछ दवाएं और मक्का जिन्हें केवल सरकारी व्यापार एकाधिकारी द्वारा आयात किया जाता है और जिनकी मात्रा और समय भारतीय कैबिनेट की मंजूरी के अधीन है।

4.लाइसेंसिंग और टेस्टिंग पुराने, पुनर्निर्मित और सेकंड हैंड उत्पादों के आयात पर लाइसेंसिंग नियम काफी सख्त हैं। रजिस्टर्ड इंजीनियर से प्रमाणपत्र, अतिरिक्त दस्तावेज और लंबी प्रक्रिया इसमें शामिल हैं।

5.कस्टम्स बाधाएं भारत का कस्टम्स सिस्टम जटिल और असंगठित है। अक्सर वस्तुओं की घोषित कीमत को अधिकारी खारिज कर देते हैं, जिससे लागत बढ़ जाती है और समय की बर्बादी होती है।

6.बौद्धिक संपदा संरक्षण (IP Protection): भारत अभी भी "Priority Watch List" में है। पायरेसी, ट्रेड सीक्रेट संरक्षण, पेटेंट रद्द करने के मामले, और परीक्षण डाटा की सुरक्षा में कमजोरियों के कारण अमेरिकी कंपनियां चिंतित हैं।

7.सेवाओं पर प्रतिबंध: बैंकिंग, बीमा, रिटेल और डिजिटल सेवाओं में विदेशी निवेश पर सख्त नियम हैं। मल्टी-ब्रांड रिटेल में FDI 51% तक सीमित है और प्रत्येक राज्य को अंतिम निर्णय का अधिकार है। ई-कॉमर्स में इन्वेंट्री आधारित मॉडल में FDI प्रतिबंधित है।

8.डिजिटल व्यापार और डेटा लोकलाइजेशन: भारत ने डिजिटल डेटा पर नियंत्रण रखने के लिए डेटा लोकलाइजेशन का प्रस्ताव रखा है, जिससे विदेशी कंपनियों को भारत में डेटा सेंटर बनाने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

9.सरकारी खरीद और स्थानीय सामग्री- भारत में सरकारी खरीद नीति विकेंद्रीकृत है। कई मंत्रालय 50% या उससे अधिक स्थानीय सामग्री वाले उत्पादों को वरीयता देते हैं। 31 मिलियन से कम के वैश्विक टेंडर पर पाबंदी है।

10.कृषि सब्सिडी और स्टॉक होल्डिंग--भारत कृषि उत्पादकों को भारी सब्सिडी देता है, MSP (Minimum Support Price) जैसी योजनाओं से कीमतें नियंत्रित करता है और खुले बाजार में बिक्री से दाम स्थिर रखता है। इससे

वैश्विक प्रतिस्पर्धा प्रभावित होती है। प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने और वैश्विक व्यापार नीति में सक्रिय भूमिका निभाने की आवश्यकता है।

2023 की USTR रिपोर्ट के अनुसार भारत में "डिजिटल व्यापार और ई-कॉमर्स पर बाधाएं" (Barriers to Digital Trade and Electronic Commerce) निम्न है ।

1. डेटा स्थानीयकरण (Data Localization): भारत ने कई ऐसे नियम प्रस्तावित और लागू किए हैं जो डेटा को देश के अंदर ही रखने को बाध्य करते हैं। इन नियमों के चलते भारत और अमेरिका के बीच डेटा का स्वतंत्र प्रवाह सीमित हो सकता है। इससे स्थानीय डेटा केंद्रों के निर्माण की आवश्यकता बढ़ती है, जो विशेषकर छोटे व्यवसायों के लिए चुनौतीपूर्ण है।

2. इलेक्ट्रॉनिक भुगतान सेवाएं: भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने 2018 में यह अनिवार्य किया कि सभी भुगतान सेवा प्रदाता भारतीय नागरिकों के लेन-देन संबंधी डेटा को भारत में स्थित सर्वरों पर संग्रहीत करें। 2019 में यह नियम बैंकों पर भी लागू किया गया। विदेशी कंपनियों का मानना है कि यह उनके वैश्विक डेटा नेटवर्क की सुरक्षा और धोखाधड़ी की पहचान की क्षमता को बाधित करता है।

3. डिजिटल पर्सनल डेटा सुरक्षा विधेयक 2022: भारत ने अगस्त 2022 में पुराने डेटा संरक्षण विधेयक (2019) को वापस ले लिया और नवंबर 2022 में एक नया मसौदा विधेयक सार्वजनिक टिप्पणियों के लिए जारी किया। हालांकि अमेरिका ने माना कि कुछ चिंताओं को संबोधित किया गया है, फिर भी कुछ खतरनाक प्रावधान बने हुए हैं, जैसे कि डेटा को भारत से बाहर भेजने की प्रक्रिया अस्पष्ट होना।

4. इंटरनेट सेवाएं (IT नियम 2021): फरवरी 2021 में भारत सरकार ने सोशल मीडिया और डिजिटल कंटेंट को नियंत्रित करने के लिए नए IT नियम जारी किए। इन नियमों के तहत बड़े प्लेटफ़ॉर्मों को स्थानीय अनुपालन अधिकारी नियुक्त करने, डेटा स्रोत की पहचान करने, और कर्मचारियों पर आपराधिक ज़िम्मेदारी लगाने जैसी शर्तें रखी गईं, जिससे अमेरिकी कंपनियों को चिंता हुई।

5. डिजिटल सेवाओं पर कर (Digital Services Tax - DST): भारत ने 2017 में विदेशी ऑनलाइन कंपनियों पर 6% इक्वलाइज़ेशन लेवी लगाई, जिसे 2020-21 में 2% डिजिटल सेवा कर के रूप में और बढ़ा दिया गया। अमेरिका ने आरोप लगाया कि ये कर व्यवस्था अमेरिकी कंपनियों के खिलाफ भेदभावपूर्ण है और अंतरराष्ट्रीय कर सिद्धांतों के खिलाफ है।

6. पारदर्शिता की कमी (Transparency Issues): भारत में नियमों में अचानक बदलाव, सार्वजनिक टिप्पणी की कमी और WTO को सूचनाएं न देना पारदर्शिता की गंभीर कमी दर्शाता है। इससे व्यापारियों और विदेशी सरकारों के लिए नियामकीय परिवर्तनों के अनुसार ढलना मुश्किल हो जाता है।

नव निर्वाचित ट्रम्प प्रशासन और भारत–अमेरिका आर्थिक सहयोग (2025)

25 फरवरी 2025 को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच हुई आधिकारिक बैठक में दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग को मजबूत करने पर सहमति बनी। इस वार्ता में व्यापार और निवेश के क्षेत्र में कई अहम समझौते हुए।

1. 'मिशन 500' की शुरुआत

दोनों देशों के नेताओं ने 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को दोगुना से अधिक बढ़ाकर 500 बिलियन डॉलर तक पहुँचाने का लक्ष्य निर्धारित किया। यह निर्णय नागरिकों की समृद्धि, नवाचार और लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं को बढ़ावा देने की दृष्टि से लिया गया।

2. व्यापार समझौते की दिशा में पहल

व्यापार और निवेश को बढ़ाने के लिए, दोनों पक्षों ने 2025 की शरद ऋतु तक द्विपक्षीय व्यापार समझौते (BTA) पर बातचीत शुरू करने की घोषणा की। उन्होंने गैर-शुल्क बाधाओं को कम करने, सेवाओं और माल के क्षेत्र में सहयोग गहराने और समन्वित दृष्टिकोण अपनाने पर सहमति जताई।

3. टैरिफ और बाजार पहुँच में सुधार

संयुक्त राज्य ने भारत द्वारा बोरबॉन, मोटरसाइकिल, धातु और ICT उत्पादों पर टैरिफ कम करने के प्रयासों की सराहना की, वहीं भारत ने अमेरिका के साथ कृषि उत्पादों, जैसे अनार और अंगूर, तथा श्रम-गहन उत्पादों में निर्यात सहयोग को मजबूत करने का आश्वासन दिया।

4, हरित निवेश और रोजगार सृजन

भारतीय कंपनियों द्वारा अमेरिका में किए गए 7.35 बिलियन डॉलर के निवेश का उल्लेख हुआ, जिससे स्थानीय स्तर पर 3,000 से अधिक उच्च गुणवत्ता वाली नौकरियों का सृजन हुआ। इनमें नोवेलिस, JSW, एसिलॉन एडवांस्ड मटीरियल्स और जुबिलेंट फार्मा की परियोजनाएँ शामिल हैं।

5.2024-25 का व्यापार आँकड़ा

आधिकारिक रिपोर्टों के अनुसार, अमेरिका लगातार चौथे वर्ष भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बना रहा। 2024-25 में द्विपक्षीय व्यापार 131.84 बिलियन डॉलर तक पहुँच गया। भारत का अमेरिका को निर्यात 11.6% बढ़कर 86.51 बिलियन डॉलर हुआ, जबकि आयात 7.44% बढ़कर 45.33 बिलियन डॉलर रहा, जिससे भारत को 41.18 बिलियन डॉलर का व्यापार अधिशेष प्राप्त हुआ।

6. मई 2025 में व्यापारिक स्थिति

मई में अमेरिका को भारत का निर्यात 16.93% बढ़कर 8.83 बिलियन डॉलर रहा, जबकि आयात 5.76% घटकर 3.62 बिलियन डॉलर रह गया। अप्रैल–मई की अवधि में निर्यात में 21.78% की वृद्धि हुई, जबकि आयात में 25.8% की बढ़ोतरी दर्ज की गई।

7. अमेरिकी टैरिफ का भारत पर प्रभाव-

इस्पात, एल्यूमिनियम और ऑटो पार्ट्स पर अमेरिकी टैरिफ के बावजूद भारत पर इसका प्रभाव सीमित रहा है, क्योंकि इन उत्पादों का अमेरिका को निर्यात अपेक्षाकृत कम है। हालांकि, लंबे समय तक टैरिफ लागू रहने या कुछ देशों को छूट मिलने की स्थिति में भारत को चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

8. प्रमुख निर्यात–आयात वस्तुएं (2024–25)

भारत से अमेरिका को प्रमुख निर्यात: दवाएं, दूरसंचार उपकरण, कीमती रत्न, पेट्रोलियम उत्पाद, आभूषण, वस्त्र, और इस्पात उत्पाद। अमेरिका से भारत के प्रमुख आयात: कच्चा तेल, कोयला, कटे हुए हीरे, इलेक्ट्रिक मशीनरी, विमान और पुर्जे।

भारत और अमेरिका वर्तमान में एक व्यापक व्यापार समझौते पर बातचीत कर रहे हैं, जिसका उद्देश्य 2030 तक व्यापार को 500 बिलियन डॉलर तक ले जाना है। वर्तमान आँकड़े और प्रयास इस दिशा में सकारात्मक संकेत देते हैं।

निष्कर्ष

भारत–अमेरिका व्यापार संबंधों का इतिहास जटिल होते हुए भी निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर रहा है। औपनिवेशिक काल से लेकर वर्तमान समय तक दोनों देशों ने अनेक वैश्विक व आंतरिक चुनौतियों के बावजूद अपने आर्थिक सहयोग को विस्तार दिया है। 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद इस साझेदारी में उल्लेखनीय तीव्रता आई, जिससे व्यापार, निवेश, तकनीकी और रक्षा क्षेत्रों में परस्पर निर्भरता बढ़ी। हाल के वर्षों में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार रिकॉर्ड स्तर पर पहुँच चुका है, और 'मिशन 500' जैसे प्रयास इस सहयोग को नई ऊँचाइयों तक ले जाने की दिशा में अग्रसर हैं। हालांकि व्यापार संबंधों में कई बाधाएं—जैसे टैरिफ असंतुलन, डेटा स्थानीयकरण, बौद्धिक संपदा सुरक्षा और नियामकीय पारदर्शिता की कमी—अब भी विद्यमान हैं, लेकिन दोनों पक्ष संवाद और समन्वय के माध्यम से इन्हें सुलझाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। स्पष्ट है कि भारत और अमेरिका के बीच आर्थिक साझेदारी न केवल दो देशों के विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि वैश्विक व्यापार संतुलन और रणनीतिक स्थिरता के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। भविष्य में यह संबंध और भी अधिक सशक्त, समावेशी और बहुआयामी बनने की संभावना रखता है।

संदर्भ

1. Kumar, A. (2014). India–US economic relations: Changing contours. New Century Publications.
2. Singh, S. (2010). India–US trade relations in the 21st century. Deep & Deep Publications.
3. Tellis, A. J., & Mohan, C. R. (Eds.). (2015). Strategic Asia 2015–16: Foundations of national power in the Asia-Pacific. National Bureau of Asian Research. (Includes chapters on India–US economic cooperation
4. Bown, C. P., & Kolb, M. (2021). The US–India trade relationship: What's next? Peterson Institute for International Economics. https://www.piie.com
5. Chadha, R., & Sahoo, P. (2014). India–US trade and investment relations: Opportunities and challenges. Indian Council for Research on International Economic Relations (ICRIER). https://icrier.org/pdf/India-US_Trade.pdf
6. Congressional Research Service. (2023). U.S.–India trade relations. https://crsreports.congress.gov
7. Joshi, V. (2022). India–US trade policy evolution: Bilateralism and WTO context. Brookings India. https://www.brookings.edu
8. Ministry of Commerce & Industry, Government of India. (2024). India–USA trade statistics. https://commerce.gov.in
9. Office of the United States Trade Representative (USTR). (2024). U.S.–India trade facts. https://ustr.gov
10. Ministry of External Affairs (MEA), India. (2024). India–US bilateral economic cooperation. https://mea.gov.in
11. Observer Research Foundation (ORF). (2023). Indo–US trade and technology ties: A deepening agenda. https://www.orfonline.org
12. Pant, H. V. (Ed.). (2015). The India–US partnership: Asian security and beyond. HarperCollins Publishers India.
13. Tellis, A. J., & Blackwill, R. D. (2015). India: The reluctant rising power. Carnegie Endowment for International Peace.
14. https://carnegieendowment.org/2015/06/11/india-reluctant-rising-power-pub-60250
15. Pant, H. V. (Ed.). (2016). India's foreign policy and regional multilateralism. Routledge.
16. Mukherjee, R. (2014). India's foreign policy: Coping with the changing world. Oxford University Press.
17. Research Papers / Journal Articles
18. Mohan, C. R. (2019). India and the United States: Building a durable partnership. International Affairs, 95(4), 765–782. DOI: 10.1093/ia/iiz094
19. Rajan, R. S. (2020). India–US trade relations: Trends, prospects and challenges. World Economy, 43(5), 1291–1306. https://doi.org/10.1111/twec.12904
20. Muni, S. D., & Mohan, C. R. (2005). Emerging Asia: India's role. The Washington Quarterly, 28(3), 137–154. https://doi.org/10.1162/0163660054026500

Official Reports

1. CUTS International. (2024). The Past, Present, and Future of India–U.S. Defense Relations [Briefing Paper].
2. https://cuts-citee.org/pdf/bp-past-present-and-future-of-india-us-defense-relations.pdf

3. Vivekananda International Foundation. (2025). The Evolution of India-U.S. Trade Relations and the New Delhi Negotiations of March 2025.
4. https://www.vifindia.org/article/2025/april/The-Evolution-of-India-US-Trade-Relations
5. Office of the United States Trade Representative (USTR). (2023). 2023 National Trade Estimate Report on Foreign Trade Barriers: India.
6. https://ustr.gov/sites/default/files/2023_NTE_Report.pdf
7. Ministry of Commerce and Industry, Government of India. (Annual). India–U.S. Bilateral Trade Statistics.https://commerce.gov.in
8. US Department of Commerce, Bureau of Economic Analysis (BEA). (n.d.). U.S. Trade with India. https://www.bea.gov
9. Ministry of External Affairs, Government of India – Bilateral Relations (India–USA) https://www.mea.gov.in/india-usa-relations.
10. 13. USTR – India Country Page https://ustr.gov/countries-regions/south-central-asia/india
11. U.S. Embassy in India – Trade and Economic Cooperation https://in.usembassy.gov/embassy-consulates/new-delhi/sections-offices/foreign-commercial-service/
12. NITI Aayog – Research on India's Trade Policy https://www.niti.gov.in